JAGRAN

Josh

your guide to success

WWW.JAGRANJOSH.COM

छत्तीसगढ़ राज्य सेवा मुख्य परीक्षा 2011: समाज शास्त्र का पाठ्यक्रम

समाज शास्त्र
प्रथम प्रश्न पत्र
समाज शास्त्र
(अवधारणा एवं सिद्धाँत)

1 समाज शास्त्र – समाज शास्त्र एक विषय के रूप में, अध्ययन क्षेत्र ।
दार्शनिक बनाम वैज्ञानिक अध्ययन ।
समाज शास्त्र का सामाजिक मानव शास्त्र, अर्थ शास्त्र, सामाजिक मनोविज्ञान एवं राजनीति शास्त्र से संबंध ।

2 अध्ययन प्रकृति – सामाजिक घटना की अवधारणा, मनुष्य एवं समाज ।
अध्ययन की इकाई । मनुष्य वैसा व्यवहार क्यो करता है जैसा कि वह करता है ।

3 अध्ययन पद्धति – शोध प्ररचना, वैज्ञानिक शोध के चरण ।
अवधारणा, उपकल्पना एवं सिद्धाँत, प्रश्नावली, अनुसूची, अनुमापन विधियॉ ।
सांख्यिकी का उपयोग, मध्यक, मध्यका एवं बहुलांक की प्रारंभिक जानकारी ।

4 ए.कॉम्ट – विज्ञान का संस्तरण, प्रत्यक्षवाद एवं तीन स्तरों का नियम ।
एच. स्पेंसर – उद्विकास का सिद्धॉत एवं समाज की सावयवी अवधारणा ।
ई. दुर्खीम – सामाजिक तथ्य, सामूहिक चेतना, श्रम विभाजन,
आत्महत्या एवं धर्म की उत्पत्ति का सिद्धान्त।
के. मार्क्स – द्वंदात्मक एवं ऐतिहासिक भौतिकवाद, आर्थिक निर्णयवाद,
संघर्ष सिद्धॉत एवं वर्ग संघर्ष, अतिरिक्त मूल्य का सिद्धॉत एवं शोषण ।
एम. वेबर –आदर्श प्रारूप, नौकरशाही– प्रोटेस्टेन्ट आचारनीति एवं पूँजीवाद ।

5 समसामयिक सिद्धॉत –
1. टी. पारन्सस – सामाजिक किया, सामाजिक व्यवस्था एवं सामाजिक प्रतिमानित विकल्प ।
2. आर. मर्टन – प्रकार्यात्मक पराडाइम, सन्दर्भ समूह, मध्य अभिसीमा का सिद्धातॅ एवं विसंगति ।

6 सामाजिक संरचना, रेडक्लिफ ब्राउन एवं ईवान्स प्रिचर्ड द्वारा प्रतिपादित सामाजिक संरचना की अवधारणा ।

7 सामाजिक समूहीकरण – समूह, प्राथमिक एवं द्वितीयक। समूदाय, समिति, भीड़, श्रोता समूह एवं जनता ।

8 सामाजिक संगठन एवं विघटन – सामाजिक संघठन की अवधारणा एवं आवश्यक तत्व । सामाजिक विघटन के कारक ।

9 संस्कृति – अर्थ एवं गुण, संस्कृति संघर्ष, संस्कृति एवं समाज, संस्कृति एवं व्यक्तित्व, परसंस्कृतिग्रहण।

10 सामाजिक परिवर्तन – अर्थ, प्रगति एवं उद्विकास, सामाजिक विकास ।
परिवर्तन के सिद्धॉत – उद्विकासवादी एवं नव उद्विकासवादी, चक्रीय एवं संघर्ष का सिद्धॉत ।

द्वितीय प्रश्न पत्र
भारतीय समाज

1 सामाजिक संगठन का परम्परागत आधार– हिन्दू सामाजिक संगठन के आवश्यक तत्व – वर्ण व्यवस्था, धर्म, आश्रम, कर्म एवं पुरूषार्थ

2 एकता एवं विविधता –
प्रमुख धार्मिक समूह, इस्लाम एवं ईसाइ धार्मिक मत।
हिन्दू सामाजिक व्यवस्था पर अन्य धार्मिक समूहों का प्रभाव ।

3 जनांकिकीय संघठक –
प्रमुख समुदायों की जनसंख्या, ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या, भारतीय जनजातियों का जनसंख्यात्मक वितरण, लिंग अनुपात, शिक्षा एवं व्यवसायिक संरचना।

4 सामाजिक स्तरीयकरण –
सामाजिक स्तरीयकरण की अवधारणा एवं कार्य, जाति व्यवस्था एवं वर्ग संरचना, कृषक एवं औद्योगिक संरचना, सामाजिक न्याय एवं सामाजिक गतिशीलता।

5 आर्थिक व्यवस्था –
कृषक एवं औद्योगिक अर्थव्यवस्था, निजी एवं सार्वजनिक क्षेत्र के प्रतिमान, मिश्रित अर्थव्यवस्था । बहुसंख्यक समाज के सामाजिक जीवन पर उदारीकरण एवं वैश्वीकरण का प्रभाव ।
आर्थिक असमानता की दशाऐं एवं दरिद्रता, दरिद्रता संस्कृति का कुचक्र ।

6 राजनैतिक व्यवस्था –
प्रजातांत्रिक व्यवस्था एवं मौलिक अधिकार, बहुदलीय व्यवस्था, गठबंधन की सरकार के प्रभाव एवं परिणाम, जन कल्याण की वर्तमान स्थिति ।
चुनाव में जाति, वर्ग एवं आर्थिक शक्ति का प्रभाव। विकेन्द्रीकरण के लाभ एवं हानियॉ ।
सामाजिक विकास की एक प्रविधि के रूप में पंचायती राज ।

7 सामाजिक संस्थायें –
परिवार – मातृसत्तात्मक एवं पितृसत्तात्मक परिवार।
ग्रामीण एवं नगरीय परिवेश में परिवार ।
परिवार के बदलते हुए स्वरूप में बच्चों एवं वृद्धों की स्थिति ।
विवाह – अंर्तजातिय एवं अंर्तधार्मिक विवाह का समाज पर प्रभाव ।
वैवाहिक दम्पत्ति में हिंसा ।
नातेदारी – जनजातिय समाज में नातेदारी व्यवस्था का प्रभाव ।
नगरीय एवं औद्योगिक समाज में नातेदारी व्यवस्था का बदलता स्वरूप ।
बदलते हुए भारतीय समाज में नातेदारी से संबंधित अधिकार एवं उत्तरदायित्व का प्रभाव ।
स्थिति एवं भूमिका – ग्रामीण एवं नगरीय समाज में भारतीय महिलाओं में भूमिका संघर्ष ।
भारत के परिवर्तित सामाजिक परिदृश्य में प्रदत्त एवं अर्जित स्थिति का महत्व ।

8 धर्म एवं विश्वास व्यवस्था – धर्मो के वैचारिक आधार ।
ग्रामीण एवं जनजातिय विश्वास व्यवस्था।
धर्म एवं जादू के कार्य । धर्म एवं जादू में समानता एवं अन्तर ।

9 सामाजिक आन्दोलन एवं उग्र समूह –
सामाजिक आन्दोलनों की अवधारणा ।
कृषक, जनजातिय, औद्योगिक एवं छात्र आन्दोलन।
युवा असंतोष, अलगाववादी एवं उग्र समूह।

10 सामाजिक समस्याये एवं गत्यात्मकता –
सामाजिक समस्या का समाजशास्त्रीय अर्थ । ऋणग्रस्तता, बंधुवा मजदूर, बाल श्रमिक एवं दहेज की समस्या ।
पुर्ननिर्माण एवं सामाजिक संतुलन की प्रक्रियाएं । संस्कृतिकरण, पश्चिमीकरण, सार्वभौमिकीकरण एवं आधुनिकीकरण ।